कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष-2023

गुन्दली की उन्नत खेती

जिला कृषि पदाधिकारी सह–परियोजना निदेशक आत्मा, राँची

कृषि भवन परिसर, कांके रोड, राँची, झारखण्ड

गुन्दली की उन्नत खेती

झारखण्ड के पठारी क्षेत्र में गुन्दली की खेती प्रायः आदिवासी किसानों द्वारा की जाती है। गुन्दली खरीफ के मौसम में तैयार होनेवाली पहली फसल है और इसकी खेती बहुत पुराने समय से होती आ रही है। परन्तु इस फसल की खेती करनेवाले किसान अच्छी उपज नहीं ले पाते हैं, क्योंकि वे इसकी खेती पुराने ढ़र्रे से करते हैं। इस फसल की खेती वैज्ञानिक ढंग से करने पर औसत उपज 5-6 क्विन्टल और अच्छी उपज 8-10 क्विन्टल प्रति हेक्. टयर कम खर्च में आसानी से प्राप्त की जा सकती है। किसानों द्वारा गुन्दली की कम उपज पाने के मुख्य कारण हैं :-

पौधों की संख्या में कमी : साधारणतः किसान गुन्दली की बोआई जैसे तैसे छींटकर करते हैं। गुन्दली के बीज बहुत छोटे और महीन होते हैं। बोने के समय किसान बीज छींटकर जुताई कर देते हैं। ऐसा करने से बीज अधिक गहराई में चले जाते हैं और उग नहीं पाते। कुछ बीज जमीन की सतह पर ही रह जाते हैं जिन्हें चींटियाँ तथा पक्षी चुग जाते हैं। जो बीज जमीन में उचित गहराई में रहते हैं वहीं अंकुरित हो पाते हैं इस प्रकार पौधों की संख्या में काफी कमी आ जाती है। अतः उपज में कमी स्वभाविक है।

उर्वरक और जैविक खादों का प्रयोग न करना : गुन्दली की खेती के लिए किसान उर्वरक या जैविक खाद (गोबर या कम्पोस्ट) का प्रयोग नहीं करते हैं। जिसके अभाव में पौधों को उचित मात्रा में पोषक तत्व नहीं मिल पाता है और अन्ततः पौधों का विकास ठीक से नहीं हो पाता है और उपज में भारी कमी आ जाती है।

खर पतवार का समय से नियंत्रण न करना : प्रायः ऐसा देखने को मिलता है कि किसान गुन्दली की खेती पर खास ध्यान नहीं देते हैं। बीज की बोआई के बाद खेत में फिर फसल काटने ही जाते हैं। ऐसा करने से फसल खर-पतवार से दब जाती है और उपज बहुत कम मिल पाती है।

उन्नत किस्मों की खेती न करना : स्थानीय किस्मों की अपेक्षा उन्नत किस्मों की उपज क्षमता कहीं अधिक है। किसान प्रायः स्थानीय किस्मों को ही उगाते हैं और इसके चलते भी गुन्दली की उपज कम पाते हैं।

क्र.सं.	पोषक तत्व	फसल		
		गुन्दली	धान	गेहूँ
1.	कार्बोहाइड्रेड (ग्राम)	6.7	78.2	71.2
2.	प्रोटीन (ग्राम)	7.7	6.8	11.8

3.	वसा(ग्राम)	4.7	0.5	1.5
4.	उर्जा (कि. कैलोरी)	341	345	346
5.	रेशा(ग्राम)	7.6	0.2	1.2
6.	खनिज लवण (ग्राम)	1.5	0.6	1.5
7.	कैल्सियम (मिली ग्राम)	17	10	41
8.	फास्फोरस (मिली ग्राम)	220	160	306
9.	आयरन (मिली ग्राम)	9.3	0.7	5.3

गुन्दली/कुटकी की स्वास्थवर्धक विशेषताएँ

- मधुमेह को कम करने में सहायक
- कैंसर से बचाव में सहायक
- खाद्य रेशे की प्रचुरता
- एंटी आक्सिडेंट्स से भरपूर
- फ्री रेडिकल्स के दुष-प्रभाव से बचाव
- पाचन तंत्र को मजबुत रखने में सहायक

बिरसा कृशि विश्वविद्यालय, राँची में 'गुन्दली' पर शोध कार्य किया जा रहा है और इस फसल की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित अनुशंसायें की गई हैं।

(क) जमीन का चुनाव और तैयारी : गुन्दली की खेती के लिए टाँड़ जमीन उपयुक्त है। जिस खेत में पानी का जमाव होता हो उसमें गुन्दली नहीं लगानी चाहिए, क्योंकि गुन्दली के पौधे पानी का जमाव सहन नहीं कर पाते। गुन्दली की फसल के साथ यह विशेषता है कि इसकी खेती कमजोर जमीन में भी हो सकती है। गुन्दली की खेती के लिए साधारणतः दो तीन जुताई की आवश्यकता पड़ती है पहली जुताई के बाद गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट 5 गाड़ी प्रति हेक्टयर की दर से खेत में बिखरे एवं जोतकर उसे मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। अन्त में पाटा चलाकर खेत को ऐसा समतल कर दें कि वर्षा के पानी का जमाव खेत में कहीं भी न हो पाये।

(ख) उन्नत किस्म : बिरसा गुन्दली : 1:55 - 60 दिन में तैयार औसत उपज 6 - 8 क्विन्टल /हे0।

(ग) बीज बोने का समय : इस क्षेत्र में साधारणतः मानसून की वर्षा 15 जून के बाद शुरू होती है। गुन्दली की बोआई का काम वर्षा प्रारम्भ कर शीध्र ही पूरा कर लें। क्योंकि प्रायः अगात बोआई के पौधे स्वस्थ और रोग रहित होते है।

(घ) बीज दर : गुन्दली की बोआई कतार में करनी चाहिए और इसके लिए 8 - 10 किलो बीज प्रति हेक्टयर की आवश्यकता है।

(ङ) रासायनिक खाद : सीधी बोआई (हल के पीछे) के समय प्रति हेक्टयर 23 किलो यूरिया 65

किलो सिंगल सुपर फास्फेट और 16 किलो म्यूरेट औफ पोटाश का व्यवहार करें। हल के पीछे सीधी बोआई करते समय रासायनिक खाद को मिट्टी में मिलाकर डालना अच्छा होता है जिससे कि रासायनिक खाद और बीज के बीच सीधा सम्पर्क न हो सके। नालियों में पहले रासायनिक खादों को डालें और बाद में बीज बोयें। बोआई के करीब 25 दिन बाद 23 किलो यूरिया का प्रति हेक्टयर की दर से खड़ी फसल में भुरकाव कर दें।

(च) बोने की विधि : सीधी बोआई करने के लिए 2.0-25 सेमी0 की दूरी पर छिदली नालियाँ (2-3 सेमी0 गहरी) घिसे हुए देशी हल से खोलें। इन नालियों में पहले रासाय. निक खादों को मिलाकर मिट्टी में डाल दें। उसके बाद बीज को नालियों में इस प्रकार बोवें कि बीज ठीक-ठीक पूरे खेत में बोने के लिए पूरा हो जाए। बोआई करते समय इस बात का ध्यान रखें कि बीज न अधिक घना गिरे और न अधिक पतला। बोआई समाप्त करने के बाद हलका पाटा चला दें।

(छ) निकाई-गुड़ाई : जब पौधे 15-20 दिन के हो जायें तो निकाई-गुड़ाई उचित समय पर करना आवश्यक है। इस समय घास-पात बहुत ही छोटे रहते हैं, इसलिए उनका नियंत्रण आसानी से हो जाता है। दूसरी निकौनी आवश्यकतानुसार करें। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है, कि फसल में नेत्रजन का भुरकाव करने के पहले प्रथम निकौनी कर लेना जरूरी है। ऐसा नहीं करने से खर-पतवार को नेत्र जन का लाभ मिलेगा और गुन्दली की फसल कमजोर हो जाएगी।

पौधा संरक्षण : गुन्दली के पौधों में यहॉ रोग नहीं लगता है। कभी-कभी ''धड़ छेदक'' का प्रकोप गुन्दली में पाया गया है। इसके रोक-थाम के लिये हिलडान 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर दें आवश्यकतानुसार हिलडान का छिड़काव 12-15 दिनों पर दोहराया जा सकता है।

(ज) कटनी तथा दौनी : फसल पक जाने पर इसे जड़ से काटा जाता है। दो तीन दिन धूप में सुखाकर बालों को मसलकर दाना अलग किया जाता है। इसके बाद अनाज को ठीक से हवा में उड़ाकर दाना अलग कर

मूल्यसंवर्धित उत्पाद : प्रसंस्करण द्वारा गुन्दली की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं उपभोक्ता स्वीकार्यता तीन से चार गुनी बढ़ायी जा सकती है। कुछ तकनीकें जैसे मित्रित आटा, फ्लेकिंग,पाफ्रिंग, माल्टिंग, बेकिंग, स्टार्च निष्कासन आदि का उपयोग कर इस लुप्त होते अनाज का मूल्यसंवर्धन कर सकते है। परिष्कृत चमकदार अनाज को भिगोने के बाद रोलर में दबाकर चूड़ा बनाया जा सकता है। गुन्दली से मूल्यवर्धित उत्पादों में प्रमुखतः खीर, पेटीज, इडली, लड्डू, खीचड़ी, बिरयानी इत्यादि बनाए जाते है जो पौष्टिकता से युक्त होते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
जिला कृषि पदाधिकारी सह–परियोजना निदेशक आत्मा, राँची
कृषि भवन परिसर, कांके रोड, राँची, झारखण्ड